अध्याय पंचम

शोध सारांश एवं सुझाव

अध्याय पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5. प्रस्तावना

5.1 समस्या कथन

5.2 शोध के उददेश्य

5.3 शोध परिकल्पनाएँ

5.4 शोध /अध्ययन के चर

5.5 अध्ययन की परिसिमाएँ

5.6 न्यादर्श

5.7 शोध में प्रयुक्त उपकरण

5.8 प्रदत्तों का संकलन

5.9 प्रयुक्त सांख्यिकी विधि

5.10 शोध निष्कर्ष

5.11 शै. सुझाव

5.12 भावी शोध हेतु सुझाव

अध्याय पंचम

5. प्रस्तावना

वर्तमान में ये आवश्यक है की सवको समान शिक्षा प्राप्त हो जाये । इसी उददेश्य को लेकर 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा निती में विकलांग बच्चों की शिक्षा पर जोर दिया गया।

इस अध्याय में लघुशोध अध्ययन का सांराश एवं प्रदत्तां के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष एवं भविष्य में कियें जाने वाले अध्ययन संबंधी सुझावां को प्रस्तुत किया गया है।

5.1 समस्या कथन

''आवासीय विघालय के विकलांग छात्र एवं छात्राओं की बौद्धिक क्षमता तथा सृजनात्मकता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''

5.2 शोध के उददेश्य

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नलिखित है –

1. विकलांग छात्र एवं छात्राओं की बौद्धिक क्षमता का उनके शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. विकलांग छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता का उनके शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का अध्ययन करना।
3. विकलांग छात्र एवं छात्राओं की बौद्धिक क्षमता तथा सृजनात्मकता के सम्बन्ध का अध्ययन करना।
4. विकलांग छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुल्नात्मक अध्ययन करन।

5. विकलांग छात्र एवं छात्राओं की बौद्धिक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

6. विकलांग छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करन।

5.3 अध्ययन की परिकल्पनाएँ –

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित है।

1. आवासीय विद्यालय के विकलांग छात्र एवं छात्राओं की बौद्धिक क्षमता का उनके शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

2. विकलांग छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता का उनके शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

3. विकलांग छात्र एवं छात्राओं की बौद्धिक क्षमता का सृजनात्मकता से सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

4. विकलांग छात्र एवं छात्राओं की बौद्धिक क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. विकलांग छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6. विकलांग छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।''

5.4 शोध के चर

प्रस्तुत अध्ययन के म्निलिखित चर हैः-

स्वतंत्र चर	वौद्धिक क्षमता
	सृजनात्मकता
परतंत्र चर	शैक्षिक उपलब्धि
उपचर	छात्र एवं छात्राएं

5.5 शोध की परिसिमाएं

प्रस्तुत शोध की परिसिमाएं निम्नलिखित है।

1. प्रस्तुत अध्ययन में चंद्रपुर जिले के केवल तीन आवासीय स्कूल तक सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में कुछ बच्चों में से केवल 60 बच्चों का ही न्यादर्श चयन किया गया ।
3. प्रस्तुत अध्ययन में 12 से 15 वर्ष आयु के बच्चों तक सीमित किया गया।

5.6 न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में महाराष्ट्र के चद्रपुर जिले के कुल आवासीय स्कूलों में से केवल तीन आवासीय स्कूलों का चयन किया गया है। न्यादर्श का चयन हेतु पूरपूरसर पद्धती से किया गया।

5.7 शोध में प्रयुक्त उपकरण

1. बौद्धिक क्षमता	–	जलोटा का समूहिक शाब्दिक बुद्धि परीक्षण ।
2. सृजनात्मकता	–	बाकर मेहदी का सृजनात्मक चिंनण परीक्षण।
3.शैक्षिक उपलब्धि	–	छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियां जानने के लिए अर्द्धवार्षिक परीक्षा के मार्क लिए गए है

5.8 प्रदत्त का संकलन

अपने शोध से संबंधित आंकडो का संकलन करने के लिए महाराष्ट्र राज्य के चन्द्रपुर जिले के तीन आवासीय विद्यालय राजीव गांधी अपंग विद्यालय ब्रम्हपुरी निवासी अपंग विघालय देसाईगंज, और निवासी अपंग विद्यालय मूल। इन तीन स्कूलो को चयनित किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में दो परीक्षणो के मध्य का सम्बन्ध जानने के लिए Co-rrelation लगया गया हैं। परीक्षण द्वारा छात्र एवं छात्राओं के बीच बन्तर ज्ञात किया गया है।

5.9 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीः

शोध समस्या से संबंधित संकलित प्रिदत्तों के सारणीकरण करने के उपरान्त उचित परिणाम प्राप्त करने के लिए उपयुक्त सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। दो परिक्षणों के मध्य संबंध देखने के लिए 'सहसम्बन्ध' का उपयोग किया जाना है छात्र एवं छात्राओं में अन्तर जानने के लिए 'टी'

परीक्षण लगया गया है। और दोनो समूह के अन्तर की सार्थकता को ज्ञान किया गया हैं।

5.10 शोध निष्कर्ष

1. विकलांग छात्र एवं छात्राओ की बौद्धिक क्षमता और शैक्षिक उपलब्धि में साधारण सहसम्बन्ध है।
2. विकलांग छात्र एवं छात्राओ की सृजनात्मक और शौक्षिक उपब्धि में सार्थक सम्बन्ध नही है।
3. विकलांग छात्र एवं छात्राओं की बौद्धिक क्षमता और सृजनात्मकता में नगन्य सहसम्बन्ध (Negligible) है।
4. विकलांग छात्र एवं छात्राओं के बीच शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही है।
5. छात्र एवं छात्राओ के बीच बौद्धिक क्षमता में सार्थक अन्तर है।
6. विकलांग छात्र एवं छात्राओं के बीच सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नही है।

5.11 शैक्षिक सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक सुझाव निम्नलिखित है।

1. विकलांग छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि बढाने के लिए उनके तरीको से पढाना चाहिए । सामान्य बच्चों की तरह उनका पाठ्यक्रम नही होना चाहिए। राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा 2005 में कहा गया है ' शिक्षा बिना बोझ की' (Learning without Burden) होनी चाहिए।
2. विकलांग छात्र एवं छात्राओं की बौद्धिक क्षमता बढाने के लिए बौद्धिक कार्यकलापों का आयोजन करना चाहिएं

3. विकलांग छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता को बढाने के लिए उन्हें Creative बनाने के लिए शिक्षको को खुद Creative होना चाहिएं। और बच्चों की सृजन क्षमता को बाहर लाना चाहिए।

4. विकलांग विघालय के शिक्षक को अलग से प्रशिक्षण देना चाहिएं।

5. कक्षा में विघार्थियों को अभिप्रेरित किया जाना चाहिए जिससे उनकी सृजनात्मकता को बढावा दिया जा सकें।

5.12 भावी शोध हेतु सुझाव

1. बडा प्रतिदर्श लेकर विकलांग छात्र एवं छात्राओं की बौद्धिक क्षमता तथा सृजनात्मकता पर कार्य किया जा सकता हैं।

2. आवासीय विघालय के छात्रों की तरह शिक्षकों की बौद्धिक क्षमता तथा सृजनात्मकता के सम्बन्ध में अध्ययन कर सकते है।

3. विकलांग छात्र और सामान्य छात्रों के बीच बौद्धिक क्षमता तथा सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

4. विकलांग छात्र और सामान्य छात्रों के बीच शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।